तन्त्र पर बहुत अधिक पड़ रहा है, इसी लाइफ स्टाइल का प्रभाव खान-पान, आचार विचार और सोच पर इतना हावी हुआ है कि जिस कारण महिलाओं में मानसिक तनाव व डिप्रेशन की प्रवृत्ति बढ़ी है और इसी लाइफ स्टाइल के कारण 'इन्सोमिया' की प्रोब्लम सामने आ रही है। 'इन्सोमिया' एक मनोरोग है।

मनोचिकित्सक के अनुसार इन्सोमिया का अभिप्राय (Sleeping disorder) अर्थात नींद का न आना (अनिद्रा) है। इन्सोमिया मानसिक रोगों की फर्स्ट स्टेज है। जिसमें तनावग्रस्त रोगी को नींद कम आती है। धीरे-धीरे इसका अनुपात (Ratio) घटता जाता है। इससे रोगी घोर डिप्रेशन में चला जाता है। जो कि एक भयंकर मानसिक रोग है। इस रोग का निवारण म्यूजिक थैरेपी के द्वारा संभव हो पाया है। क्योंकि संगीत के द्वारा शरीर में उत्पन्न 'एड्रिनेल' की मात्रा को कम करके किया जाता है। जिससे दर्द में आराम मिलता है। संगीत के सुर शरीर के विजातीय द्रव्य और विषैले पदार्थों को निकालकर, शरीर को चुस्त-दुरस्त करता है। यही नहीं संगीत द्वारा हृदय का स्पन्दन, भावात्मक परिष्कार और स्फूर्तिमान बनाता है। डॉ. भास्कर लिखते हैं- मनोरोगियों पर संगीत इतना प्रभाव डालता है कि अन्य किसी उपचार विधि से सम्भव नहीं हो सकता है। संगीत हर जीवित वस्तु को उत्साह प्रदान करता है। इसीलिए संगीत चिकित्सा एक उत्तम चिकित्सा पद्धति है। जो कि महिलाओं को मनोवैज्ञानिक तौर पर मजबूती प्रदान करके उसे मानसिक रूप से स्वस्थ रखने में सहायक है। अत: एक स्वस्थ मस्तिष्क ही नवीन क्रिया, विचार व नवीन उत्कृष्ट मार्ग प्रशस्त करता है।

3. महिला की आर्थिक उन्नति में संगीत का योगदान:

सदियों से हमारे समाज में ऐसा ही होता आया है कि महिलायें आर्थिक रूप से पुरुषों पर ही निर्भर रहती हैं। उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के विषय में सोचा ही नहीं गया। किन्तु आज समय बदला है परिस्थितियाँ बदली है। आज समय की मांग है कि वह पुरुषों के साथ कंधे से कंधे मिलाकर चलें। आज महिलाओं ने न केवल घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर अपना क्षेत्र, अपने दृष्टिकोण को व्यापक रूप से सकारात्मक दिशा दी है बल्कि आज वह अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किसी व्यक्ति विशेष पर निर्भर रहना नहीं चाहती, बल्कि स्वयं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए अपने परिवार को भी आर्थिक सहयोग प्रदान करते हुए स्वयं का अस्तित्व होने का आभास कराती है।

आज संगीत ने धनोपार्जन के विभिन्न मार्ग खोल दिये हैं जो संगीत किसी जमाने में मात्र मनोरंजन का साधन था वही संगीत वर्तमान समय में धन अर्जित करने का एक मुख्य साधन बन गया है।

जनसंचार के माध्यम, आकाशवाणी, फिल्म, दूरदर्शन, शिक्षा जगत, चिकित्सा, भौतिकी, वनस्पति व जन्तु (पशु पालन) इत्यादि क्षेत्र आज हमें अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। यह सब वह क्षेत्र हैं जो आज मनुष्य को नवीन आयाम प्रदान कर रहे हैं। समय की आवश्यकतानुसार महिलाओं की रूचि में भी परिवर्तन आया है वह पारंपरिक विषयों से हटकर स्वयं को मनोविकारों से परे रखकर अपनी क्रियाशीलता को गति प्रदान करना चाहती है। इस क्षेत्र में संगीत से खूबसूरत दूसरा कोई विषय हो ही नहीं सकता।

आज जब हम महिला की सुरक्षा व उन्नति की बात करते हैं तो आज भी न जाने कितने परिवार उनकी सुरक्षा को लेकर चिन्तित होने के कारण उन्हें घर से बाहर निकलने की अनुमति प्रदान नहीं करते हैं। इन विपरीत परिस्थितियों में भी संगीत एक ऐसा माध्यम है कि महिला घर बैठे भी संगीत, शिक्षा (गायन, वादन, नृत्य) देकर धन अर्जित कर सकती है।

अत: नारी का उदात्त, व्यापक व सर्वांगीण विकास करके ही हम विकास के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं। नारी के सर्वांगीण विकास के साथ ही उसे सामाजिक सुरक्षा व उन्नति में संगीत को माध्यम बनाकर उसके विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

समकालीन उपन्यासों में नारी चित्रण

डॉ. अर्चना सिंह
एसो. प्रो., हिन्दी
कु.मा.रा.म.स्ना.महाविद्यालय, बादलपुर

डॉ. मिन्तु
असि. प्रो. हिन्दी
कु.मा.रा.म.स्ना.महाविद्यालय, बादलपुर

शोध सारांश

उत्तर आधुनिकता के इस दौर में नारी में नई चेतना का संचार हुआ है। भारतीय नारी को जिस पशुता, उपेक्षा एवं तिरस्कार का व्यवहार समाज

SBN : 978-93-80216-06-5